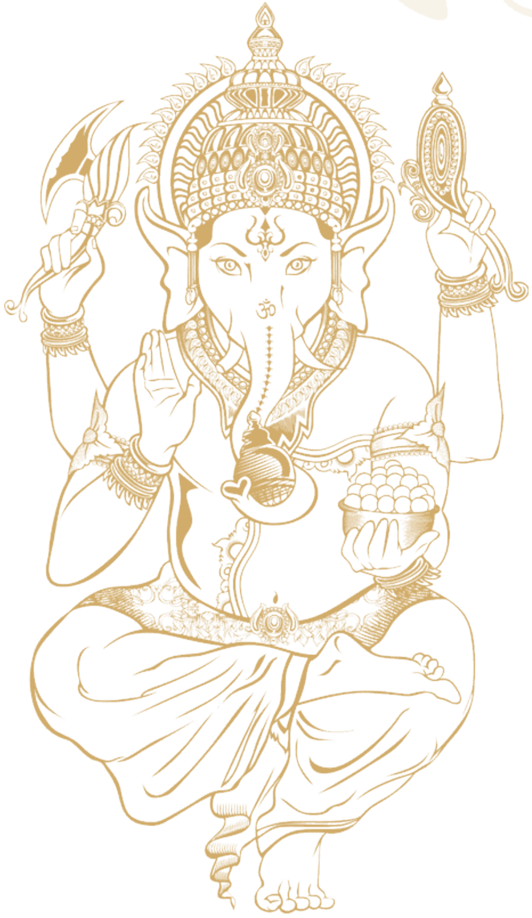

?????? ???? ????

16 Jul 2025

07:40 PM

Delhi

तिथि 16/07/2025 **समय** 19:40:00 **वार** बुधवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:53
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	14:57:32 घं	गण	मनुष्य
वेलान्तर	00:06:07 घं	योनि	गौ
सूर्योदय	05:33:46 घं	नाड़ी	मध्य
सूर्यास्त	19:20:15 घं	वर्ण	विप्र
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	जलचर
शक संवत	1947	वर्ग	सिंह
मास	श्रावण	युँजा	अन्त्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	जल
तिथि	6	जन्म नामाक्षर	झ-झूलेलाल
नक्षत्र	उ०भाद्रपद	पाया(रा.-न.)	ताम्र-लौह
योग	अतिगण्ड	होरा	बुध
करण	वणिज	चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी
शनि 7वर्ष 6मा 29दि
शनि
16/07/2025
13/02/2033

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	16/07/2025
चन्द्र	18/08/2026
मंगल	27/09/2027
राहु	03/08/2030
गुरु	13/02/2033

योगिनी
भद्रिका 1वर्ष 11मा 28दि
भद्रिका
16/07/2025
15/07/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	16/07/2025
संकटा	23/02/2026
मंगला	14/04/2026
पिंगला	25/07/2026
धान्या	24/12/2026
भ्रामरी	15/07/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			06:29:34	मक	उत्तराषाढ़ा	3	सूर्य	बुध	---	0:00			
सूर्य			00:05:05	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	चंद्र	मित्र राशि	1.34	कलत्र	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			11:20:48	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	चंद्र	सम राशि	1.34	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल			22:43:49	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	शनि	मित्र राशि	1.19	आत्मा	भ्रातृ	क्षेम
बुध			21:15:23	कर्क	आश्लेषा	2	बुध	शुक्र	शत्रु राशि	1.19	अमात्य	ज्ञाति	सम्पत
गुरु			14:07:22	मिथु	आर्द्रा	3	राहु	बुध	शत्रु राशि	1.16	मातृ	धन	मित्र
शुक्र			19:07:03	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	बुध	स्वराशि	1.33	भ्रातृ	कलत्र	साधक
शनि	व		07:42:35	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	केतु	सम राशि	0.92	ज्ञाति	आयु	जन्म
राहु			25:33:22	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु			25:33:22	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

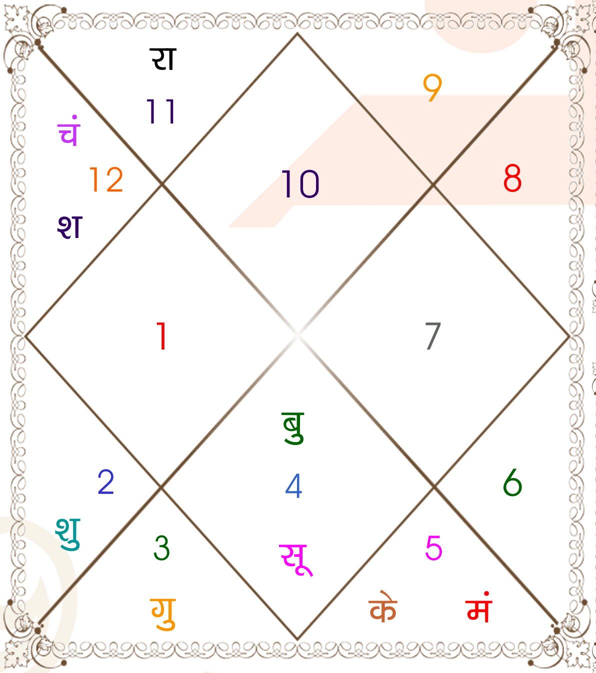

चन्द्र कुंडली

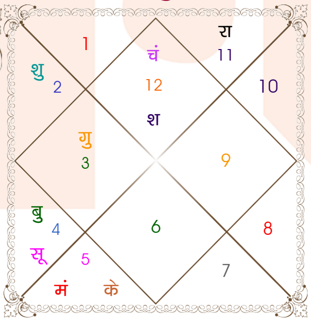

नवमांश कुंडली

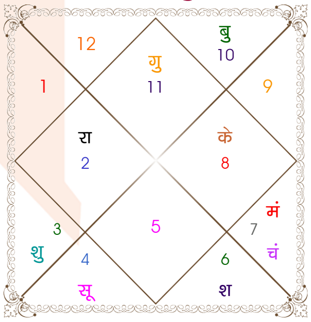

सर्वाष्टकवर्ग

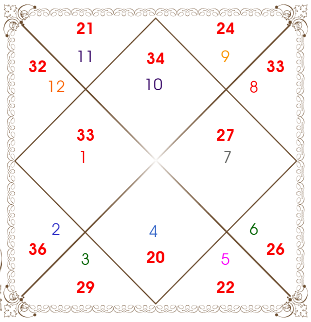

दशमांश कुंडली

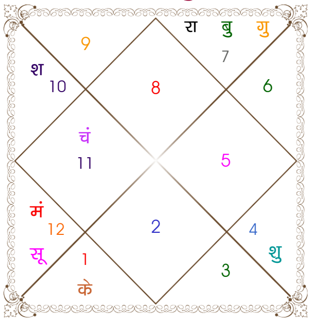

नक्षत्रफल

आप उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण ब्राहमण, गण मनुष्य, योनि गौ, नाड़ी मध्य तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "झ" या "झा" अक्षर से होगा।

आप अपने कुल या परिवार में श्रेष्ठ रहेंगे तथा समस्त परिवार जनों से यथोचित स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। आपका कद मध्यम रहेगा एवं जीवन में सर्वदा अच्छे कार्यों को करने के लिए आप रूचिशील रहेंगे तथा प्रयत्न पूर्वक इनको सम्पन्न करेंगे। आपके इन सत्कार्यों से अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा आपको आदर प्रदान करेंगे। आपके पास पूर्ण मात्रा में धनैश्वर्य रहेगा तथा एक धनाढ्य पुरुष के रूप में आप समाज में ख्याति प्राप्त करेंगे। साथ ही आपका स्वभाव अभिमानी भी रहेगा एवं अन्य जनों के समक्ष इसका आप समय समय पर प्रदर्शन भी करते रहेंगे। इससे लोगों में आपके प्रभाव में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त आप एक यशस्वी पुरुष होंगे एवं समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि रहेगी।

कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्ता।
यस्तोत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यो भवेन्मानधनो वदान्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराभाद्रपद में उत्पन्न जातक कुल में श्रेष्ठ, मध्यम देह वाला, शुभकर्मों को करने वाला, धनाढ्य, अभिमानी और कीर्तिशाली होता है।

आप नाना प्रकार के सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में यत्नपूर्वक इनका अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आप एक त्यागी पुरुष भी होंगे एवं समाज तथा परिवार में अवसरानुकूल अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करेंगे। धन का आपके पास अभाव कम ही रहेगा अन्यथा इससे आप सुसम्पन्न ही रहेंगे। साथ ही विविध प्रकार के शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा एवं एक विद्वान के रूप में भी आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा रहेगी।

चाहिर्बुध्न्यजमानवो मृदुगुणस्त्यागी धनी पंडितः।
जातक परिजातः

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक मृदुगुणों से सम्पन्न अर्थात् सात्विक, धनी, त्यागी और पंडित होता है।

भाषण देने की कला में आप प्रवीण होंगे तथा अपने ओजस्वी तथा प्रभावी वक्तव्यों से अन्य जनों को प्रभावित करने में सर्वदा सफल रहेंगे। आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे तथा जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपका परिवार भी विशाल रहेगा एवं पुत्र पौत्रादि के सुख को प्राप्त करने में भी आप सौभाग्यशाली रहेंगे। आपके शत्रु

हमेशा भयभीत एवं पराजित रहेंगे तथा आपका विरोध करने में वे असमर्थ रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपकी निष्ठा रहेगी तथा नियमपूर्वक इसका अनुपालन करने में आप तत्पर रहेंगे।

वक्ता सुखी प्रजावान जितशत्रुधार्मिको द्वितीयासु।
बृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र का जातक वक्ता, जीवन में सुखी, बहुत पुत्र एवं पौत्रों से युक्त, शत्रुओं को जीतने वाला तथा धार्मिक आचरण से सम्पन्न होता है।

आप एक गौरवशाली पुरुष होंगे एवं समाज में अपने सद्गुणों तथा सत्कार्यों से हमेशा सम्मानित रहेंगे। धर्म के विषय में आप का ज्ञान विस्तृत रहेगा तथा सभी लोगों की आपके प्रति हार्दिक श्रद्धा भाव रहेगा। समाज में आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा तथा साहसी प्रवृति होने के कारण शौर्यादि गुणों से भी आप सम्पन्न रहेंगे एवं साहसिक कार्यों को करने के लिए नित्य प्रयत्न शील रहेंगे।

गौरः ससत्वो धर्मज्ञः शत्रुघाती परामरः।
उत्तराभाद्रपदजो नरः साहिसको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य गौरवर्ण, धर्म का ज्ञाता, शत्रुओं का नाश करने वाला, देवताओं के तुल्य, सत्वगुण प्रधान एवं साहसी होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। अतः जीवन में आप धन वैभव से प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। काव्यशास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप परिश्रमपूर्वक ख्याति भी अर्जित करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में पूर्ण स्नेह रहेगा तथा उनको आप हमेशा अपने ओर से प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। सुन्दर वस्त्रों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनको पहनने एवं संग्रह करने में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा आप एक बलशाली पुरुष होंगे। साथ ही आप पराक्रम से भी युक्त रहेंगे एवं शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत तथा तत्पर रहेंगे। आप सामान्यतया प्रसन्नचित रहेंगे। परन्तु आपका स्वभाव कृपण होगा। इसके अतिरिक्त आप एक विद्वान एवं सौभाग्यशाली पुरुष भी रहेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आप सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा आपका मस्तक विस्तृत एवं नासिका उन्नत रहेगी। साथ ही आपके आखें भी सुन्दर होंगी तथा शरीर के सर्वाङ्ग सुडौल पुष्ट तथा सुन्दर रहेंगे। आपका कटिभाग पतला होगा। शिल्प विद्या में आप निपुण रहेंगे एवं इस क्षेत्र में आप परिश्रम पूर्वक ख्याति एवं सफलता भी अर्जित कर सकेंगे। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में आप हमेशा सफल रहेंगे तथा वे भी आपसे नित्य भयभीत एवं प्रभावित रहेंगे तथा आपका विरोध करने में प्रायः असमर्थ रहेंगे। आप कई शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम रहेंगे तथा एक उत्तम विद्वान के रूप में समाज में आपकी

प्रतिष्ठा रहेगी। साथ ही संगीत शास्त्र में भी आपका हार्दिक रूझान रहेगा तथा इस का आप अच्छा ज्ञान रखेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण निष्ठा तथा श्रद्धा रहेगी एवं नियमपूर्वक इनका अनुपालन करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। सभी वर्ग में आप पूर्ण रूप से प्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सम्मान एवं आदर प्राप्त होता रहेगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय रहेगी तथा सभी लोग आपकी वाणी से प्रभावित रहेंगे। आप जीवन में आवश्यक सुखसंसाधनों से सुशोभित रहेंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही क्रोध के भाव की आप में अल्पता रहेगी। आप राजकीय सेवा में भी नियुक्त रहेंगे तथा खान से उत्पन्न द्रव्यों से आजीविकार्जन करेंगे। साथ ही इससे पर्याप्त मात्रा में लाभार्जन भी करेंगे। स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा सम्पूर्ण सांसारिक कार्यों को उसी के कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सभी सामाजिक लोगों से अच्छा व्यवहार करेंगे एवं सबसे आपके मधुर संबंध रहेंगे। इसके अतिरिक्त समुद्री जहाज में यात्रा करने या नावादि में सैर करने से भी आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। साथ ही दानशीलता का भाव भी आप में रहेगा एवं इसका आप प्रायः यथाशक्ति अनुपालन करते रहेंगे।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोऽहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप जलोत्पन्न द्रव्यों या समुद्र से निकले मोती, शंख आदि रत्नों से पूर्ण लाभ प्राप्त करेंगे। साथ ही जीवन में किसी अन्य व्यक्ति या संबंधी अथवा मित्रादि की सम्पत्ति को प्राप्त करेंगे तथा सुखपूर्वक उसका उपभोग भी करेंगे। नारी वस्त्रों के प्रति आपके मन में विशेष अनुराग रहेगा। इसके अतिरिक्त आपके शरीर का कद भी मध्यम रहेगा।

जलपरधनभोक्ता दारवासोऽनुरक्तः।
समरुचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

आप पानी पीने की बार बार इच्छा करेंगे तथा दिन में कई बार इसका प्रयोग करेंगे। आप अपनी पत्नी पर पूर्ण विश्वास करेंगे तथा उससे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप एक महान विद्वान होंगे तथा कृतज्ञता के सद्गुण से हमेशा सुशोभित रहेंगे एवं अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर उनका पूर्ण उपकार स्वीकार करेंगे तथा हार्दिक रूप से उनका आभार भी प्रकट करेंगे। इस प्रकार आपके सद्गुणों से प्रभावित होकर सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक भाग्यशाली पुरूष होंगे तथा जीवन में आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम के द्वारा भाग्यबल से ही सम्पन्न हो जाएंगे।

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।

विद्वान्कृतज्ञो ऽभिभवत्यऽमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोऽन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप एक संयमशील पुरूष होंगे तथा इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से नियंत्रण रखकर जीवन व्यतीत करेंगे। साथ ही आप एक चालाक एवं बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को चालाकी तथा बुद्धिमानी से ही सम्पन्न करेंगे। पानी में क्रीड़ा करने से आप को अत्यन्त ही आनन्दानुभूति होगी एवं इसके लिए आप प्रायः रूचिशील रहेंगे। साथ ही आप निर्मल बुद्धि के पुरूष होंगे एवं अन्य जनों से आपका व्यवहार अत्यन्त ही निस्वार्थ रहेगा तथा छल कपट का भी सर्वथा आप में आभाव रहेगा।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आपका अधिकांश समय उदरपोषण संबंधी कार्यों में ही व्यतीत होगा तथा यदा कदा लाभ क्ष्रेतों में व्यवधान आने के कारण आपको आर्थिक कठिनाई का भी सामना करना पड़ेगा। आपका शरीर कान्तिमान रहेगा एवं इससे आपके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व में निखार आएगा। आप एक साहसी व्यक्ति होंगे एवं साहस पूर्वक अपने कार्य को सम्पन्न करेंगे। साथ ही आपका स्वभाव सन्तोष से युक्त रहेगा तथा जो कुछ भी आपके पास हो उसी पर सन्तोष करके प्रसन्नता को प्राप्त करेंगे।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोऽप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारुकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप में गम्भीरता की प्रधानता रहेगी तथा वीरता के गुणों से भी आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही समाज में आप एक परम आदरणीय तथा श्रद्धेय व्यक्ति माने जाएंगे एवं सब लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। कृपणता का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा एवं धन संचय में अधिक प्रवृत रहेंगे। आपकी कृपणता से कई बार अन्य लोगों को आपसे कष्टानुभूति होगी जिससे वे आपसे अप्रसन्नता प्रकट करेंगे। आप परिवार तथा कुल में सबके प्रिय रहेंगे एवं सभी परिवार जन आपको यथायोग्य स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। सेवा कार्यों में भी आपकी प्रवृति रहेगी तथा यथाशक्ति इसको पूर्ण करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आप तीव्रगति से गमन करने वाले व्यक्ति होगे एवं आपका चाल चलन भी श्रेष्ठ रहेगा तथा बन्धुवर्ग में आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगे।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।

नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

आप एक आकर्षक एवं सुन्दर व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा उच्चकोटि के विद्वानों के लक्षणों से भी सुशोभित रहेंगे। साथ ही समाज में महिला वर्ग से आपके सम्बन्ध मधुर एवं मैत्रीपूर्ण रहेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ हैं अतः आप देवता तथा ब्राहमणों के प्रति नित्य श्रद्धावान रहेंगे तथा समयानुसार इनकी सेवा तथा पूजा करते रहेंगे। आप में अभिमान का भी भाव रहेगा एवं समय समय पर अन्य जनों के समक्ष इस भाव का आप प्रदर्शन भी करते रहेंगे। आप शारीरिक रूप से भी बलवान रहेंगे एवं अपने अधिकांश कार्यों को स्वबल से करने में भी आप निपुण रहेंगे। इससे समाज में आप आदर एवं ख्याति अर्जित करेंगे। आपका शरीर कान्ति मान रहेगा तथा अन्य कई लोगों का आपके द्वारा पालन होगा एवं वे आपसे सुखानुभूति प्राप्त करेंगे।

आप समाज में सर्वदा आदरणीय रहेंगे एवं धन वैभव से सुसम्पन्न रहकर उसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगे। आपकी आखें बड़ी बड़ी होंगी तथा निशाने बाजी की कला में आप निपुणता प्राप्त करेंगे साथ ही इस क्षेत्र में आप विशेष सफलता तथा ख्याति भी प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त आप नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गो योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्त्रीवर्ग में अत्यन्त ही लोकप्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान अर्जित होता रहेगा। आप उत्साही प्रवृति के पुरुष होंगे एवं अपने समस्त सांसारिक कार्यों के उत्साह पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। वाद विवाद में आप अत्यन्त ही चतुर होंगे तथा अपनी इस प्रवृति से अपने महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।

अर्थात गोयोनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहनेवाला, वादविवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए

हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थाई रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखे।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मन में चिन्ता, शरीर में व्याकुलता, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की श्रद्धापूर्वक आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से वृहस्पति वार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत वस्त्र, पीत चन्दन, चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं खत्म होगी तथा अन्य अशुभ फलों का प्रभाव समाप्त होकर शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।